प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/21

अफ्रीकी सुकर बुखार

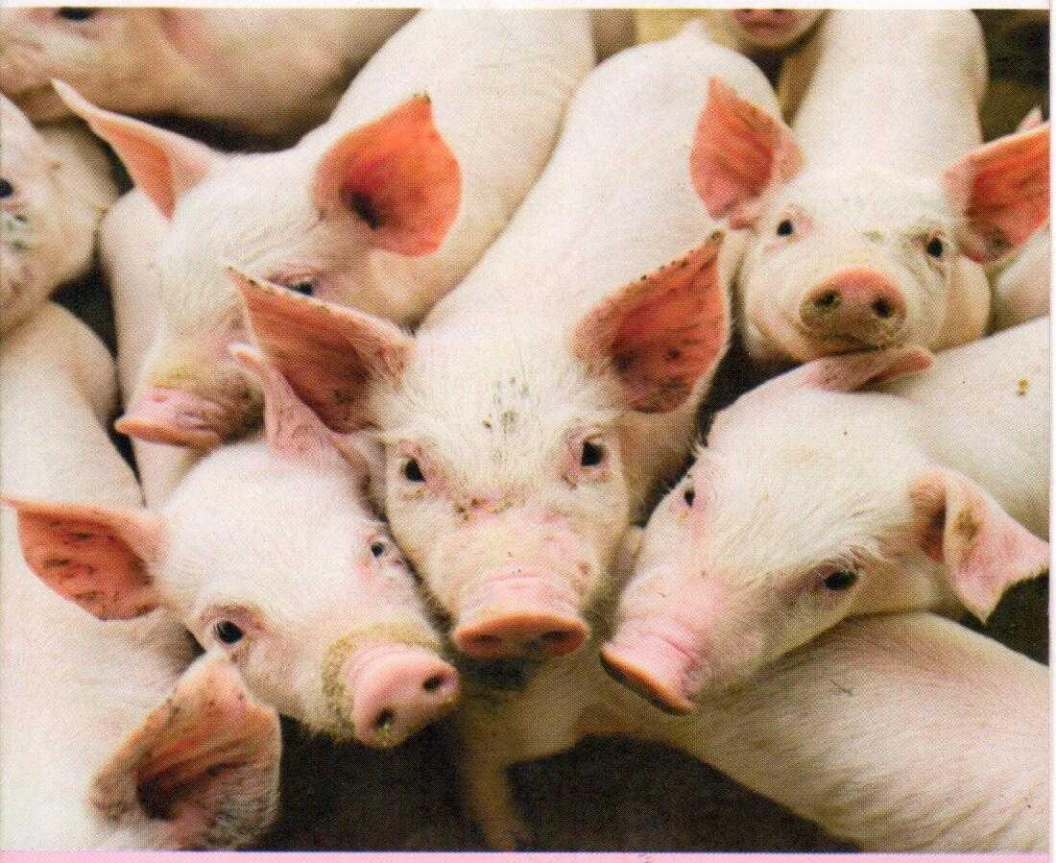

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

अफ्रीकी सुकर बुखार

अफ्रीकी स्वाइन बुखार अतिसंक्रामक विषाणु जनित रोग है जो पालतू एवं जंगली सुकरों में होता है।यह बीमारी सभी उम्र के सुकरों को हो सकती है।इसके होने पर कई तरह के नैदानिक लक्षण दिखायी पड़ते हैं किन्तु रक्तस्त्रावी बुखार का होना इस बीमारी का मुख्य लक्षण है।इस बीमारी के हो जाने पर सुकरों में लगभग १०० प्रतिशत मृत्युदर पायी गयी है। जिससे सुकर पालकों को गंभीर आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है।यह बीमारी अस्फर्विरीडी प्रजाति के विषाणु से फैलाती है जो की एक डीएनए विषाणु है।

अफ्रीकी सुकर बुखार अन्य सुकरों में कैसे फैलता है

पालतू सुकरों में यह बीमारी मुख्यतया निम्न तरीके से फैलती है:–

१. संक्रमित सुकरों के संपर्क में आने से

२. सुकर पालन में दूषित उपकरणों के उपयोग से

३. संक्रमित जंगली सुकरों के संपर्क में आने से

४. दूषित खाद्य पदार्थों के उपयोग से

५. दूषित जूते एवं कपड़ों के द्वारा

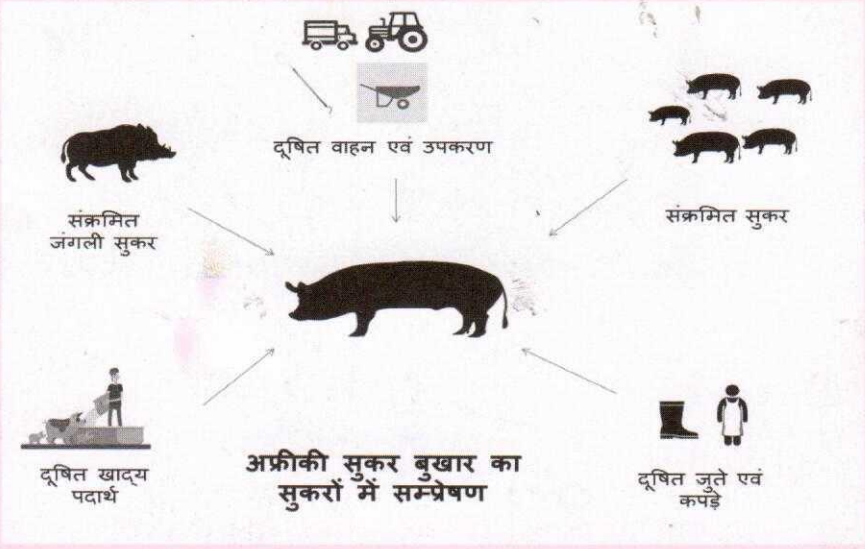

अफ्रीकी सुकर बुखार की पहचान कैसे करें

अफ्रीकी सुकर बुखार के मुख्या लक्षणः

- तीव्र बुखार (105.8से 107.6^{o}C)
- साँस की गति तीव्र होना एवं साँस लेने में कठिनाई होना
- कान, नथुनों, पूंछ एवं पैर के निचले हिस्से का नीला पड़ना
- नाक एवं आँख से पानी आना
- चमड़ी पर खून के चकत्ते पड़ना
- खूनी दस्त होना
- कान का नीला– बैगनी पड़ना
- साँस लेने में कठिनाई होना

इस बीमारी से संक्रमित सुकरों में ऊपर दिये गये लक्षणों में से अधिकतर या सभी लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

अफ्रीकी सुकर बुखार का निदान

१. शव परिक्षण के द्वारा

खूनी स्त्राव का मिलना

फेफड़ों, ह्रदय, लीवर एवं मूत्राशय पर रक्त के थक्के मिलना

वृक्को पर खून के महीन थक्के

२. प्रमाणिकता के लिए विषाणु की पहचान करना (उत्तक संवर्धन, PCR या इम्यूनो–परोक्सिडेज स्टेनींग तकनीक द्वारा) एंटीबाडी कीं पहचान करना (ELISA, इम्यूनो–ब्लाटिंग या इनडायरेक्ट फ्लोरसेंट एंटीबाडी एस्से द्वारा)

अफ्रीकी सुकर बुखार से बचाव कैसे करें

इस बीमारी से बचाव हेतु न ही कोई वैक्सीन उपलब्ध है एवं न ही इसका कोई उपचार है जैव सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करके ही किसान भाई अपने सुकर पालन को इस बीमारी से बचा सकते हैं

अफ्रीकी सुकर बुखार से बचाव के लिए ध्यान देने योग्य जानकारियां:

- नियमित रूप से सुकरों के स्वास्थ्य की जाँच करते रहना चाहिये।
- बीमारी के मुख्य लक्षणों के बारे में जागरूक होना चाहिये।
- सुकरों की असामान्य मृत्यु को नजरंदाज न करें एवं शीघ्र ही पशुचिकित्सक या सक्षम अधिकारी को सूचित करें।
- बीमार सुकरों को यथाशीघ्र स्वस्थ सुकरों से अलग कर देना चाहिये।
- बाड़े में चूने का छिड़काव करना चाहिए एवं सुकर बाड़े में प्रवेश के पहले फुट बाथ में पोटेशियम परमैगनेट का घोल रखना चाहिये।
- बाहरी लोगों का फार्म में प्रवेश वर्जित कर देना चाहिये एवं सुकरों के बाहर घुमने पर पाबन्दी लगाना चाहिये।
- पालतू सुकरों को जंगली सुकरों के संपर्क में आने से रोकना चाहिये।
- साफ सफाई एवं रोगाणु मुक्त करने हेतु उपाय
- सभी सुकर बड़ों की नियमित साफ सफाई करें।
- सुकर पालन में प्रयुक्त होने वाले सभी सामानों, उपकरणों, वस्त्रों, जूतों की नियमित साफ सफाई।
- बाड़े में प्रवेश से पहले साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- सुकरों को खिलाने के पहले घर से निकलने वाले किचेन वेस्ट जैसे की सब्जी के छिलके आदि को अच्छे से पका लेना चाहिये।

सभी संक्रमित सुकरों को तत्काल मार देना चाहिए तथा उनके शव तथा अपशिष्ट पदार्थों को अच्छे से जलाना चाहिए या सुकर बाड़े से सुरक्षित दुरी पर जमीन में बहुत नीचेगाड़ देना चाहिए।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- पंकज कुमार, सरोज कुमार रजक एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN